ST. PAUL TEACHER'S TRAINING COLLEGE
BIRSINGHPUR, SAMASTIPUR

RECORD OF
OBSERVATION & CRITICISM OF LESSONS

Name of the Student SHIVANI KUMARI

College Roll No. 42 Session 2021-2023

University Roll No.

Class B.Ed. Subject Observation

Topic Observation Record Date

Signature of Observer (i) *(ii)*

	Highly Satisfactory अत्यधिक संतोषजनक	Most Satisfactory अति संतोषजनक	Satisfactory संतोषजनक	Less Satisfactory अल्प संतोषजनक	Un Satisfactory असंतोषजनक	Any other remarks अन्य तथ्य
1. Class management of the lesson प्रस्तुत पाठ के लिए कक्षा प्रबन्ध			✓			
2. Aims of lesson to what extend achieved पाठ उद्देश्य की प्राप्ति सीमा				✓		
3. Preparation of the lesson पाठ की तैयारी		✓				
4. Adequacy पर्याप्तता					✓	
5. Balance संतुलन					✓	
6. Conformity with the stand aims कथित उद्देश्य की अनुरूपता		✓				
7. Persentation of lesson विषय वस्तु का प्रस्तुतिकरण			✓			
8. Pupil involvement in the learing process शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षार्थी सहयोग		✓				
9. Individual Attention Paid व्यक्तिगत ध्यान			✓			
10. Activities Provided प्रदत्त क्रियाशीलन					✓	
11. Qualities of question asked प्रश्नों का स्वरूप				✓		

	Highly Satisfactory अत्यधिक संतोषजनक	Most Satisfactory अति संतोषजनक	Satisfactory संतोषजनक	Less Satisfactory अल्प संतोषजनक	Un Satisfactory असंतोषजनक	Any other remarks अन्य तथ्य
12. Demonstration or experiment if any प्रदर्शन अथवा प्रयोग		✓				
13. Attituds towards pupils छात्रों के प्रति मनोवृति			✓			
14. Black Board Work श्यामपट्ट कार्य	✓					
15. Teachniques of evaluation मूल्यांकन पद्धति	✓					
16. Teachniques of evaluation मूल्यांकन पद्धति	✓					
17. Teacher Language शिक्षक/शिक्षिका की भाषा	✓					
18. Pronunciation उच्चारण				✓		
19. Articulation शब्दों की स्पष्टता			✓			
20. Voice of the teacher शिक्षक/शिक्षिका की आवाज			✓			
21. Manner of teaching and self confidence शिक्षण रीति एवं आत्मविश्वास	✓					
22. Disposal of the class कक्षा विसर्जन			✓			

	Highly Satisfactory अत्यधिक संतोषजनक	Most Satisfactory अति संतोषजनक	Satisfactory संतोषजनक	Less Satisfactory अल्प संतोषजनक	Un Satisfactory असंतोषजनक	Any other remarks अन्य तथ्य
1. Class management of the lesson प्रस्तुत पाठ के लिए कक्षा प्रबन्ध	✓					
2. Aims of lesson to what extend achieved पाठ उद्देश्य की प्राप्ति सीमा			✓			
3. Preparation of the lesson पाठ की तैयारी			✓			
4. Adequacy पर्याप्तता				✓		
5. Balance संतुलन				✓		
6. Conformity with the stand aims कथित उद्देश्य की अनुरूपता		✓				
7. Persentation of lesson विषय वस्तु का प्रस्तुतिकरण		✓				
8. Pupil involvement in the learing process शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षार्थी सहयोग		✓				
9. Individual Attention Paid व्यक्तिगत ध्यान			✓			
10. Activities Provided प्रदत्त क्रियाशीलन				✓		
11. Qualities of question asked प्रश्नों का स्वरूप					✓	

	Highly Satisfactory अत्यधिक संतोषजनक	Most Satisfactory अति संतोषजनक	Satisfactory संतोषजनक	Less Satisfactory अल्प संतोषजनक	Un Satisfactory असंतोषजनक	Any other remarks अन्य तथ्य
12. Demonstration or experiment if any प्रदर्शन अथवा प्रयोग		✓				
13. Attituds towards pupils छात्रों के प्रति मनोवृति			✓			
14. Black Board Work श्यामपट्ट कार्य	✓					
15. Teachniques of evaluation मूल्यांकन पद्धति	✓					
16. Teachniques of evaluation मूल्यांकन पद्धति	✓					
17. Teacher Language शिक्षक/शिक्षिका की भाषा	✓					
18. Pronunciation उच्चारण	✓					
19. Articulation शब्दों की स्पष्टता			✓			
20. Voice of the teacher शिक्षक/शिक्षिका की आवाज		✓				
21. Manner of teaching and self confidence शिक्षण रीति एवं आत्मविश्वास		✓				
22. Disposal of the class कक्षा विसर्जन	✓					

Introduction :-

मानव की सबसे बड़ी संपत्ति उसकी संस्कृति है। अपने संस्कृति के कारण ही वह एक सामाजिक प्राणी बनता है और प्राकृतिक दशाओं को अपने अनुकूल बनाने की क्षमता रखता है।

संस्कृति का तात्पर्य शिष्टाचार अथवा विनम्रता मात्र से नहीं है बल्कि संस्कृति उस पहलुओं से है जिसमें हम जीवन के प्रतिमानों, व्यवहारों के तरीकों भौतिक व अभौतिक प्रतीकों परम्पराओं विचारों, सामाजिक मूल्यों मानवीय क्रियाओं और आविष्कारों को सम्मिलित करते है। अतः व्यक्तियों को सामाजिक बनने में जिन तथ्यों का योगदान होता है, उन सभी तथ्यों का योगदान होता है, उन सभी तथ्यों के व्यवस्था का नाम ही संस्कृति है। संस्कृति शब्द का शाब्दिक अर्थ सुन्दर, रुचिकर अथवा कल्याण व्यवहार या गुणों से होता है। इस संस्कृति के रूप में भिन्नता हो सकती है परन्तु इसके उद्देश्यों में यह आदर्श मूल्य प्रेरक सिद्धांत और बाह्य उपकरणों के संबंध को उन्हें अनुप्रमाणित करते है। इस संबंध में लार्ड रिप्लेज ने कहा कि " भारत में धर्म, रीति-रिवाज भाषा तथा सामाजिक भौतिक भिन्नताओं के होते हुए भी जीवन की एक विशेष एकरूपता कन्याकुमारी से हिमालय तक देखा जा सकता है। "

संस्कृति से संबंधित कुछ क्रियाएं हैं जो हमें अपनी संस्कृति के बारे में जागरुक तो करता ही है साथ ही हमारा मनोरंजन भी करती है। इन क्रियाओं को ही सांस्कृतिक क्रियाएँ कहते हैं।

भर्तृहरि ने कहा —

"कला साहित्य, संगीत, साक्षात, पशु पुच्छ विसान होना।"

अतः इससे स्पष्ट है कि संस्कृति संस्कारों का एक समूह है मानव पर जो संस्कार जन्म से मृत्यु तक दिखाई पड़ते हैं सामूहिक रूप से वही संस्कृति कहलाती है। यह एक पीढ़ी से लेकर दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होती रहती है। संस्कृति में हम धर्म और दर्शन के विचारों का आदान-प्रदान परिवार व्यवस्था सामाजिक नियंत्रण, कलात्मक अभिव्यक्ति विज्ञान, भाषा एवं मनोरंजन आदि को शामिल कर सकते हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का अर्थ —

सांस्कृतिक कार्यक्रम का अर्थ किसी देश की संस्कृति को कला के माध्यम से लोगों का जागृत किया जाता है। इसमें सभी लोग एकत्रित होकर आते हैं तथा नाच गाना कविताएँ होती हैं। ये क्रियाएँ राष्ट्रीय तौर पर, सामाजिक तौर पर और विद्यालय में होते हैं जिसके माध्यम से विभिन्न प्रकार के कला का विकास होता है तथा ये लोगों को मनोरंजन एवं शिक्षा देती है।

उदाहरण के लिए मीनी मंच का कार्यक्रम लोगों का बाल विवाह के लिए जागरूक करती है। ये बाल-विवाह से होने वाले नुकसान और संविधान में इसके लिए क्या प्रावधान किए गए हैं। यह बनाती है जो नुक्कड़ नाटक के तौर पर गाँव-गाँव में दिखाएँ जाते थे।

गाँवों में प्रत्येक त्योहारों पर कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का अर्थ किसी देश की संस्कृति की विशेषताओं को बनाये रखना है, जिसके माध्यम से वहां के नागरिक अपने देश की संस्कृति से हमेशा अवगत होते रहें। प्रत्येक देश की अलग-अलग संस्कृति होती है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का महत्व :-

सांस्कृतिक कार्यक्रम का हमारे जीवन में निम्नलिखित महत्व है —

(i) सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम में लोगों का सामाजिक, बौद्धिक मानसिक और सृजनात्मक शक्ति का विकास होता है।

(ii) विद्यालय में होने वाली सांस्कृतिक क्रियाओं के माध्यम से बालकों के अंदर सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है।

(iii) सांस्कृतिक कार्यक्रम बालकों में भाई-चारा सहयोग एवं मानसिक चेतना को बल देती है।

(iv) यह मनोरंजन का सर्वोत्तम साधन है जो बालकों को उत्साहित करती है। वह नये-नये प्रकार के कार्यों को सीखने के लिए विद्यालय में सक्रिय रहते हैं।

(v) इसके माध्यम से हमें हमारी संस्कृति के गुण दोष को जानने का मौका मिलता है।

(vi) इसके माध्यम से लोगों को जागरूक किया जाता है। जिसमें से वह सामाजिक असमानता न फैलाए और इसके माध्यम से बालकों का सर्वांगीण विकास भी होता है।

हमारे महाविद्यालय में 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें सभी ने भाग लिया बहुत से बच्चों ने देशभक्ति गानों को गाया, भाषण दिया और बहुत से बच्चों ने एकल या सामुहिक नृत्य प्रस्तुत किया कुछ ने हिन्दी में भाषण दिया तो कुछ ने English में भाषण दिया।

मूलतः यह बात सबों के भाषण से प्रकट की थी देश भले ही हमारा 15 अगस्त को आजाद हुआ हो परन्तु जो संविधान है वो 26 जनवरी को ही लागू हुआ था। संविधान लागू होने से ही नियम लागू होता है। हमारा देश नियमबद्ध होकर चला बहुत से बच्चों ने गाना गाया, देशभक्ति गाना सुनने और गाने से हमारे अंदर देश के प्रति, देश के प्रति प्रेम और स्नेह उत्पन्न होता है फिर कुछ ने नृत्य प्रस्तुत किया, जो अत्यंत ही सराहनीय था।

शिक्षकों ने भी यह पूजा और इसकी महत्ता पर प्रकाश डाला और हमें बताया एवं समझाया गया कि हमारा पूजा करने के प्रति क्या मनोदशा होनी चाहिए वैसे। फिर कुछ ने नृत्य प्रस्तुत किया जिसमें से मुख्यतः लड़कियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। नृत्य के माध्यम से हमें उसने देश के अलग-अलग Culture को जानने एवं मौका मिला, देखने को मिला। नृत्य सिर्फ नृत्य नहीं होता है वह हमारे देश के विविधताओं से जुड़ा होता है। एक सामुदायिक नाटक प्रस्तुत किया गया जिसमें दिखाया गया कि कारगिल युद्ध में और भी

जो कुछ भी युद्ध होता है, Border पर उस समय न जाने कोई सैनिक शहीद हो जाते हैं। हँसते-हँसते देश पर कुर्बान हो गए। उन शहीदों के याद में उनकी कुर्बानी को सम्मान देते हुए बच्चों ने नाटक प्रस्तुत किया।

इस प्रकार सांस्कृतिक कार्यक्रम में बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। अपने-अपने कला का प्रदर्शन किया, अपने कला के माध्यम से देश के प्रति प्यार और स्नेह दर्शाया। लोगों में देशभक्ति के भाव को जगाया। उन्होंने इस कार्यक्रम को इतना सुंदर और भव्य बनाया।

हमारे महाविद्यालय में दिनांक 4 मार्च को होली के शुभ अवसर पर उत्सव और एक छोटी सी कार्यक्रम रखी गयी। जैसा कि हम जानते हैं कि होली अर्थात् रंगों का महा उत्सव है जिसे हम एक दूसरे के साथ मिल-जुलकर एक-दूसरे को गुलाल लगाकर मनाते हैं। इस उत्सव में अपने आपस की सभी कड़वी यादों को भूलकर आपस में गले मिलते हैं।

इस कार्यक्रम में सभी शिक्षक ने एक दूसरे को गुलाल लगाया उसके बाद सभी सहपाठियों ने एक-दूसरे को गुलाल लगाया और फिर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस कार्यक्रम में सबसे पहले हमारे संगीत के जो शिक्षक हैं उन्होंने एक लोकगीत गाया। इसके बाद कुछ लड़के एवं लड़कियों ने होली पर सांस्कृतिक गीत गाया इसके साथ साथ एक जोगिरा गाने की प्रथा होती है इस होली में वह भी इस कार्यक्रम में गाया गया।

कुछ ने भोजपुरी गीत गाया तो कुछ ने हिन्दी में गाया। इस प्रकार जैसा हमारा देश विविधताओं का देश है इसी प्रकार कार्यक्रम में भी हमें देखने को मिला। कुछ लोगों ने इस उत्सव के महत्व को देखते हुए अपने भाषण के माध्यम से बताया कि होली मनाने के पीछे का कारण क्या है? हमारे पौराणिक कथाओं के बारे में बताया और भी बहुत सी बातों पर चर्चा किया। इसके साथ-साथ मैंने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया और इस बात पर मुख्य प्रकाश डाला कि होली एक पवित्र उत्सव है जिसमें लोग गिले शिकवे भूलकर

एक-दूसरे को गले लगाते हैं और साथ में यह भी बताया कि कुछ रंग हमारे चेहरों के लिए नुकसानदायक होते हैं हमें इन रंगों से सावधान रहना चाहिए। और रंग लगाते समय जोर जबरदस्ती नहीं करना चाहिए इससे हमारे आँख मुँह में पड़ सकते हैं और नुकसान भी हो सकते हैं।

इस प्रकार ~~का~~ जो उत्सव है जिसका जो महत्व है हमें उसी तरह से मनाना चाहिए. तभी हमें उत्सव मनाने का असली मजा आयेगा इस प्रकार इस कार्यक्रम के माध्यम से हमें उत्सव की अच्छाई - बुराई और उसके उत्सव और महत्व के बारे में जानकारी मिली।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के लाभ :-

सांस्कृतिक कार्यक्रम के निम्नलिखित लाभ हैं -

(i) यह बालकों में मानसिक चेतना को बढ़ाती है जिससे बालक प्रत्येक क्षण सक्रिय रहता है।

(ii) पढ़ाई के साथ - साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से बालकों के अंदर प्रतिभा में निखार आता है।

(iii) सांस्कृतिक कार्यक्रम दूसरों से व्यवहार करना, समूह से चीजों पर प्रतिक्रिया करने तथा मूल्यों के प्रति हमारी समझ को विकसित करता है।

(iv) सांस्कृतिक कार्यक्रम लोगों में न्याय सिद्धांत और मान्यताओं को मानने का तरीका सिखाता है।

(v) इसके माध्यम से पुरानी पीढ़ी के लोग अपनी संस्कृति और मान्यताओं को नयी पीढ़ी को सौंपती है।

(vi) इसके माध्यम से बालकों में नैतिक मूल्य, व्यक्तित्व प्रगति और Personality development होता है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के उद्देश्य :-

सांस्कृतिक कार्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

(i) सांस्कृतिक कार्यक्रम बच्चों के सामाजिक मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक एवं नैतिक क्षमताओं का विकास करती है।

(ii) इस कार्यक्रम के द्वारा बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है।

(iii) इसके द्वारा बच्चों में चारित्रिक विकास होता है, नाटक गायन, गीत, कविता आदि में महापुरुषों के चरित्र का वर्णन होता है जिससे सारी इच्छाओं की पूर्ति होती है।

(iv) सांस्कृतिक कार्यक्रम से सहानुभूति एवं प्रेम की भावना का विकास होता है।

(v) इससे व्यवहारिक कुशलता आती है।

(vi) इसका मुख्य उद्देश्य अपनी अमूल्य संस्कृति या संस्कृति धरोहरों को अपनी आनेवाली पीढ़ी तक पहुँचाना है

(vii) इन विद्यार्थियों में सहकारिता की भावना का विकास होता

(viii) सांस्कृतिक कार्यक्रम से व्यवसायिक कुशलता का विकास होता है।

संस्कृति के (पक्ष में) :-

(i) संस्कृति आत्मा की वह नैतिक आवेत है जो समस्त अच्छी वस्तुओं का सार ग्रहण करने में मानव की सहायता करती है। एक सभ्यक एवं सुसंस्कृत मानव ही समाज में एक आदरणीय माना जाता है। और मानव को यह आदर करने में उसके अपने विचारों व आचरणों आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

(ii) संस्कृति ही इस दिशा की ओर अग्रसित करती है।

संस्कृति (विपक्ष में) :-

(i) यदि बालक को संस्कृति के दायरे में ही संकुचित कर दिया जाएगा तो वह अपनी रचनात्मक क्षमता का विकास नहीं कर पायेगा।

(ii) यदि शिक्षा के इस उद्देश्य पर अत्यधिक बल दिया जाएगा तो बालक केवल दिखाने मात्र के लिए ही असंस्कृति के मूल्यों के वर्णन करते हैं क्योंकि व्यक्तिगत इच्छाओं एवं भावनाओं पर ढकी हो जाती है।

सांस्कृतिक क्रियाओं के प्रकार

सांस्कृतिक क्रियाओं के निम्नलिखित प्रकार हैं -

(i) **एकल गायन** - इसमें एक व्यक्ति के द्वारा किसी भी गीत को गाया जाता है।

(ii) **सामूहिक गायन** - इसमें किसी भी कहानी या घटना को कुछ व्यक्तियों के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

(iii) **निबंध लेखन** → इसमें किसी भी विषय पर बालकों को दिया गया लिखित कार्य होता है। जिसमें वह अपना पक्ष रखते हैं।

(iv) **एकल नृत्य** :- इसमें एक व्यक्ति के द्वारा किसी भी गाने पर अकेले नृत्य प्रस्तुत किया जाता है।

(v) **सामूहिक नृत्य** :- इसमें 2-4 या उससे भी अधिक व्यक्तियों के द्वारा सामूहिक गीत पर नृत्य प्रस्तुत किया जाता है।

(vi) **चित्रकला** → ये बालकों को अपने अंदर की अभिव्यक्ति या इच्छा को व्यक्त करने का माध्यम है जो किसी पेज पर रंगों के रूप में चित्रांकित किया जाता है।

विद्यालयों में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का विवरण।

मैं शिवानी कुमारी विद्यालय सहक्रिया कार्यक्रम के अंतर्गत चार माह के लिए राजकीय एस. आई. के एस. डी बालिका उच्च विद्यालय मिरजकी समस्तीपुर में कार्यरत रही। जहाँ हमने 9वीं एवं 10वीं की छात्राओं के मध्य बहुत सारे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करवाया। जो उस विद्यालय के लिए एवं वहाँ के छात्रों के लिए बहुत प्रभावपूर्ण रहा। बच्चों ने बढ़ चढ़कर इसमें भाग लिया। एवं उत्साहपूर्ण ढंग से हमें सहयोग किया।

हम सभी छात्राध्यापकों ने इस विद्यालय में कई कार्यक्रम करवाएँ जिसका विवरण निम्नलिखित है।

(I) अंतराक्षी
(II) एकल गायन
(III) निबंध लेखन
(IV) तार्किक शक्ति परीक्षण
(V) कविता - पाठ

अंतराक्षी

अंतराक्षी मनोरंजन प्राप्ति का एक स्रोत है यह आनंद को वितरित करता है। इसमें एक व्यक्ति के द्वारा गाये गए गाने के अंतिम शब्द से दूसरे व्यक्ति को गाना सुनाना पड़ता है और इसी प्रकार यह प्रक्रिया चलती रहती है।

(७)। इसमें बालिका की मानसिक क्षमता विकसित एवं मानसिक सुख की अनुभूति होती है।

मैंने अपने विद्यालय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान अपने विद्यालय में अंतराक्षी करवायी जिसमें कक्षा की कुल 20 बच्चों ने भाग लिया। इस अंतराक्षी करवायी जिसमें कक्षा की कुल 20 बच्चों ने भाग लिया। इस अंतराक्षी प्रतियोगिता के दौरान इन बच्चों को ग्रुप 'A' और ग्रुप 'B' में 10-10 सदस्यों में बाँट दिया गया था।

कार्यक्रम का नाम - अंतराक्षी
संचालिका का नाम - ~~[illegible]~~ भवानी कुमारी
सह संचालिका का नाम - रूपा कुमारी

जज का नाम - (i) नम्रता नेहा
(ii) मधु कुमारी
(iii) कुसुम कुमारी

कक्षा - 9th
उपस्थित छात्रों की संख्या - 40
प्रतिभागी छात्रों की संख्या - 30

विजेता ग्रुप का नाम - 'B'

एकल गायन

'एकल गायन' में किसी भी एक व्यक्ति द्वारा गाया गाना को प्रदर्शित करना होता है। किसी भी समारोह प्रतियोगिता आदि में व्यक्ति द्वारा एक प्रदर्शन चाहे वह गायन, नृत्य कोई भी हो सकता हो। वह व्यक्ति के अंदर आत्मविश्वास और मनोबल आदि को बढ़ता है।

इस प्रकार के कला के विद्यार्थी द्वारा प्रदर्शन से मनोरंजन एवं वातावरण में ताजगी आती है इसी लिए विद्यालय पाठ्यक्रम में सप्ताह के अंतिम दिन मनोरंजनात्मक कार्यक्रम का Period रखा गया है जो बालकों के व्यक्तित्व विकास में सहायक होती है।

विद्यालय में प्रशिक्षुओं द्वारा दिनांक को एकल गायन का आयोजन कक्षा में हुआ।

कार्यक्रम का नाम - एकल गायन
छात्राध्यापिका का नाम - शिवानी कुमारी
सहसंचालक का नाम - नम्रता नेहा

जज का नाम (i) ~~कुसुम~~ कुमारी
(ii) नम्रता नेहा
(iii) मधु कुमारी

कक्षा 10th
उपस्थित छात्राओं की संख्या - 35
प्रतिभागी छात्राओं की सं० - 30

विजेता - (i) प्रीति कुमारी
(ii) पुजा कुमारी
(iii) स्वाति कुमारी

निबंध लेखन

शीर्षक : पर्यावरण

निबंध लेखन बालकों की मानसिक चेतना सोचने विचारने की क्षमता एवं शब्द भण्डार को विकसित करती है। निबंध लेखन के लिए सबसे आवश्यक यह है कि सभी बालक निबंध के शीर्षक से भली भाँति परीचित हो तथा सभी बालक इसके संबंध में कुछ न कुछ लिख पायेंगे। बालक उस शीर्षक से संबंधित जो कुछ भी सीखते है, वह उचित हो जिससे शिक्षक को उस पर अंक देने में कठिनाई न हो।

हमा प्रशिक्षु द्वारा विद्यालय में 13/3/23 को कक्षा 9वीं में निबंध लेखन करवाया गया। जिसमें 16 बच्चों ने भाग लिया।

प्रथम तीन विजेता का नाम - (i) श्रेया कुमारी
(ii) प्रीति कुमारी
(iii) गौतमी कुमारी

तार्किक शक्ति परीक्षण

इस तार्किक शक्ति परीक्षण में हमारे द्वारा प्रत्येक बच्चों से General knowledge का 25-25 प्रश्न पूछे गए। इसमें जो बच्चा ज्यादा जवाब दिया उसे पुरस्कार दिया गया।

General knowledge के अंतर्गत बच्चों को उसी के कक्षा के विषयों की पूरी तैयारी को मुख्य स्त्रोत बनाया गया। ताकि वह अपने विषय की विषय वस्तु पर पकड़ मजबूत कर सके।

11/10/22 को तार्किक शक्ति परीक्षण कार्यक्रम रखा गया। जिसमें 30 बच्चे उपस्थित थे। जिसमें 20 बच्चों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का नाम - तार्किक शक्ति परीक्षण
छात्राध्यापिका का नाम - शिवानी कुमारी
सह- संचालिका का नाम - मधु कुमारी

दिनांक - 11/10/23

जज का नाम - आँचल कुमारी
- ममता नेहा
- मधु कुमारी

कक्षा 10th

उपस्थित छात्रों की संख्या - 30
प्रतिभागी छात्रों की संख्या - 15

विजेता - अंजली कुमारी
- शिवानी कुमारी
- सीमा कुमारी

सांस्कृतिक कार्यक्रम के लाभ होंगे

* सांस्कृतिक कार्यक्रम के निम्नलिखित लाभ हैं।

(i) बालक के अंदर सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना।

(ii) बालक के अंदर मानसिक, शारीरिक और सृजनात्मकता की क्षमता का विकास।

(iii) बालक के अंदर कला के प्रति रुचि जाग्रत करना।

(iv) बालकों को अपने जीवन के लक्ष्य की ओर बढ़ने में सहायक है।

(v) बालकों के अंदर कल्पनाशक्ति का विकास करना।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के निम्नलिखित लाभ हैं —

+ यह कमी-कमी लोगों के मानसिकता को संकुचित कर देती है।

+ प्रत्येक वर्ष बच्चों को खेलना भी उसके भविष्य को बिगाड़ सकता है।

निष्कर्ष →

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक कार्यक्रम के द्वारा किसी भी स्थान का वातावरण मनोरंजनात्मक हो जाता है चाहे वह देश शहर या गांव हो। गाँवों के विद्यालयों में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम बालकों को प्रत्येक क्षेत्र के लिए तैयारी करती है। इसके द्वारा बालकों का सामाजिक मानसिक शारीरिक एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत नाटक, गायन, कविता, पाठ, नृत्य, चित्रकला लेखन आदि आते हैं। यह बालक के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं। बालक कविता पाठ एवं लेखन में अपनी मानसिक क्षमता का विकास करते हैं। नये-नये शब्दों को सृजन कर उपयोग करते हैं जिससे उनके शब्दकोष में वृद्धि होती है।

गायन, नृत्य, चित्रकला, नाटक आदि के द्वारा बालक का मुख्य रूप से शारीरिक एवं सृजनात्मकता की क्षमता का विकास होता है।

सांस्कृतिक कला

बालक के अंदर जीवनपर्यन्त नये-नये कार्यों में काम आते हैं।

विद्यालय समय सारणी :-

परिचय :-

किसी भी विद्यालय में संपूर्ण शैक्षिक व्यवस्था, उसके दिन भर की व्यवस्थित कक्षाओं में आयोजन समय-सारणी से होता है। विद्यालय के संगठन में समय तालिका का विशेष महत्व होता है। स्कूल के प्रधानाचार्य को विद्यालय के संचालन के लिए कार्य प्रणाली का एक प्रारूप तैयार करना होता है, जिसे हम समय तालिका कहते हैं।

इसका निर्माण एक कठिन कार्य माना जाता है इसलिए शिक्षक तथा प्रधानाध्यापक को समय सारणी के निर्माण का सही ज्ञान होना आवश्यक हो जाता है।

समय सारणी / तालिका का अर्थ :-

समय तालिका वह सूची है जिसमें शिक्षकों तथा कक्षाओं का कार्य विवरण प्रदर्शित किया जाता है।

किस कक्षा में कौन-कौन से विषय कितने-कितने अवधि में किन अध्यापकों द्वारा पढ़ाए जाते हैं, इस संपूर्ण विवरण समय तालिका में वर्णित होता है। समय तालिका विद्यालय के समस्त क्रियाओं के लिए समय एवं भागीदारी का विवरण प्रस्तुत करता है। इसके द्वारा विद्यालय कक्षा कार्य को सुगमता एवं सरलतापूर्वक संचालित किया जाता है।

इस तरह समय तालिका एक दर्पण के समान है जो हमारे वास्तविक जीवन को प्रतिबिंब करता है। समय - सारणी शिक्षक व विद्यालय कर्मचारी के लिए लक्ष्य का निर्धारण करता है। इस तरह समय - सारणी विद्यालय क्रियाकलापों का मुख्य आधार है।

समय सारणी की परिभाषा :-

i) **H.G. स्टर्ड के अनुसार :-** "समय सारणी द्वारा काम की रूप - रेखा तैयार हो जाती है जिसके अनुसार विद्यालय का काम आगे बढ़ता है। यह एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा विद्यालय का अर्थ संचालित होता है।"

ii) **डॉ० जसवंत सिंह के अनुसार :-** "समय सारणी विद्यालय का स्पार्क प्लग है जो उसकी विभिन्न क्रियाओं तथा विभिन्न कार्यक्रमों को संचालित करता है।"

iii) **टण्डन एवं त्रिपाठी के अनुसार :-** "वह योजना अथवा तालिका जिसमें विद्यालय दैनिक क्रियाओं, कक्षाओं एवं समय का विभाजन दर्शाया जाता है उसे समय - विभाग चक्र कहते है।"

iv) प्रो० बी० सी० राय के अनुसार :-

समय - विभाग चक्र को विद्युत का स्पार्क प्लग कहा जाता है जो विद्यालय की विविध क्रियाओं एवं कार्यक्रमों को गति प्रदान करता है।"

समय तालिका की आवश्यकता एवं महत्व :-

विद्यालय तथा कक्षा - कक्ष को सुनियोजित तरीके से चलने के लिए समय तालिका अत्यंत आवश्यक है। इसके निम्न आवश्यकता एवं महत्व हैं :-

i) समय सारणी द्वारा विद्यालय का कार्य सुचारु रूप से चलता है।

ii) इसके द्वारा समय का सही ढंग से उपयोग होता है।

iii) समय सारणी के द्वारा शिक्षकों के समान कार्य-भार वहन करने की क्षमता प्राप्त होती है।

iv) समय सारणी द्वारा विभिन्न विषयों एवं क्रियाओं के निश्चित समय का निर्धारण होता है।

v) समय सारणी बनाने वाला व्यक्ति उन समस्याओं को ध्यान में रखकर समय - सारणी बनाता है जिससे स्कूल का कार्य बिना किसी बाधा के चल सके।

iv) विद्यालय के समय सारणी में शिक्षकों को उनकी मानसिक क्षमता को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य को देना।

v) विद्यालय के छात्रों को वर्ष भर कार्य में व्यस्त रखना।

vi) विद्यालय में व्यवस्थित एवं योजनाबद्ध कार्य का संचालन करना।

vii) विद्यालय का सफल संचालन करना।

viii) विद्यालय को कक्षा-कार्य का बिना विवाद संचालन करना।

ix) समय सारणी योजनाबद्ध तरीके से विद्यालय के संचालन में सहयोग करती है।

समय-तालिका के प्रकार :-

समय तालिका तीन प्रकार के होते हैं :-

1) **शिक्षक के अनुसार समय सारणी :-** इसमें शिक्षक के विषय रुचि, योग्यता एवं क्षमता को ध्यान में रखा जाता है।

2) **कक्षा के अनुसार समय सारणी :-** इसमें कक्षा के अनुसार तथा कक्षा के बालक की रुचि,

क्षमता, मानसिक योग्यता के अनुसार समय-सारणी तैयार किया जाता है।

3) **पाठ्य - सहगामी क्रिया के अनुसार समय सारणी :**

इसमें विषय की कठिनता एवं उसमें मौजूद पाठ्य सहगामी क्रिया के अनुसार समय-सारणी तैयार किया जाता है।

समय - सारणी निर्माण में सावधानियाँ :-

विद्यालय समय सारणी का निर्माण काफी चुनौती भरा कार्य होता है इसमें विद्यालय के शुरू होने से लेकर छुट्टी होने तक का समय जैसे विद्यालय के शुरू होने का सही समय क्या होगा ?

- किसी क्लास में किस विषय को रखना ठीक होगा।

- सभी शिक्षकों का समय समायोजित है कि नहीं।

- किसी विषय हेतु सही समयावधि मिल रही है या नहीं।

इस प्रकार अनेक प्रमुख चरणों को ध्यान में रखकर बारीकी से विद्यालय का समय तालिका बनाना चाहिए।

समय सारणी का प्रारूप :-

प्रत्येक विद्यालय के समय - सारणी का प्रारूप अलग - अलग होता है। किसी सारणी में अधिक से अधिक सूचनाएँ होती हैं, किसी में कम होती हैं।

- सभी विद्यालयों में सभी प्रकार के विकार उत्पन्न किये जाते हैं।

मेरे द्वारा अवलोकित राष्ट्रीय प्रारूप में ~~उच्च माध्य~~

सारणी को अच्छी तरह से समझते हैं। हम जानते हैं कि विद्यालय में समय सारणी की रूप-रेखा का विकास भी आवश्यक है।

समय सारणी के गुण :-

समय सारणी के निम्नलिखित गुण हैं :-

i) समय - सारणी से समय का सही सदुपयोग होता है।

ii) समय सारणी के द्वारा कक्षा कार्य सुचारु रूप से नियमबद्ध एवं कायदे के अनुरूप होते हैं।

iii) समय सारणी के कारण शिक्षक एवं छात्र अपने पाठ्य संबंधी उद्देश्यों की प्राप्ति समय - सीमा के अंदर कर पाते हैं।

iv) विद्यालय समय-सारणी के कारण बच्चों को सही समय पर कार्य करने की आदत हो जाती है।

v) इससे छात्र एवं शिक्षक दोनों अनुशासित होते हैं।

vi) इससे पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को उचित स्थान दिया जाता है, ताकि बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके।

vii) समय-सारणी विद्यालय को व्यवस्थित रखता है।

समय-सारणी के दोष :-

समय-सारणी के निम्नलिखित दोष / अवगुण हैं :—

i) समय-सारणी बच्चों को एक कक्षा-कक्ष में बाँध देता है जिससे उसका सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है।

ii) आधुनिक शिक्षा-शास्त्रियों के अनुसार समय-सारणी नहीं होना चाहिए क्योंकि समय के बंधन से विषय संबंधी ज्ञान में रुकावट आ जाती है।

iii) समय-सारणी एक शिक्षक एवं छात्र दोनों को बाँध देती है।

iv) आज के युग में क्रिया केंद्रित शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। यह तभी संभव है जब छात्र एवं शिक्षक पर समय का बंधन न हो।

v) समय सीमा के कारण कभी-कभी शिक्षक अपनी योग्यता एवं रुचि के अनुसार शिक्षण कार्य नहीं कर पाते हैं।

vi) समय सारणी के निर्माण में शिक्षा विभाग के द्वारा निर्धारित नियमों का उल्लंघन हो जाता है।

प्रातः कालीन प्रार्थना सभा गतिविधियाँ

विवरण		समय
उपस्थिति	→	2 मिनट
प्रार्थना	→	5 मिनट
आज का विचार	→	1 मिनट
छात्रों के साथ अनुक्रिया	→	2 मिनट
सामुहिक प्रशिक्षण	→	7 मिनट
समाचार (मुख्य)	→	2 मिनट
राष्ट्रगान	→	1 मिनट

कुल - 20 मिनट

बालिका उच्च विद्यालय चोबलैन, अमरतीपुर

Time → / Day ↓	9:30 - 10:00	10:00 - 11:00	11:00 - 11:40	11:40 - 12:20
सोमवार		MATH	Chemistry	Biology
मंगलवार		Physics	Math	Hindi
बुधवार		Math	Chemistry	Physics
बृहस्पतिवार	टिफिन	Math	Hindi	Science
शुक्रवार		Physics	Math	Biology
शनिवार		Chemistry	Biology	Math

12:20 - 1:00	1:00 - 1:30	1:30 - 2:10	2:10 - 2:50	2:50-3:3…
English		History	Sanskrit	
Biology		History	English	[illegible]
Hindi		Geography	Sanskrit	
Biology	मध्यांतर	English	Civics	
Sanskrit		Geography	Economics	
Hindi		Half - day.		

Conclusion → निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि समय तालिका विद्यालय छात्र एवं शिक्षक के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह छात्र एवं शिक्षक दोनों को अनुशासित रखता है। समय-सारणी यह भी बताता है कि किस कार्य को कब तक करना है इससे छात्र एवं शिक्षक दोनों का कार्य आसान हो जाता है। अतः समय-सारणी समस्त विद्यालय के क्रियाकलाप का आधार है।

Working the Community

Introduction :-

सामुदायिक कार्यक्रम संपूर्ण समुदाय के विकास की एक ऐसी पद्धति है जिसमें जन - सहभाग द्वारा समुदाय के जीवन स्तर को ऊपर उठाने का प्रयत्न किया जाता है। भारत में शताब्दियों लंबी राजनीतिक पराधीनता ने यहाँ के सम्पूर्ण ग्रामीण जीवन को पूर्णतया जर्जर कर दिया था। इस अवधि में न केवल पारस्परिक सहयोग व सहभागिता की भावना का पूर्णतया लोप हो गया था। सरकार व जनता के बीच संदेह की दीवार भी पूरी तरह खड़ी हो गयी थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के परिस्थितियाँ बहुत विषम हो गयी थी। भारत में व्यापक निर्धनता के कारण प्रति व्यक्ति आय इतनी कम थी कि भोजन के अभाव में लाखों लोगों की मृत्यु हो रही थी। कुल जनसंख्या का 30% भाग प्राकृतिक तथा सामाजिक रूप से बिल्कुल अलग - अलग था। ग्रामीण उद्योग नष्ट हो चुके थे, जातियों का कठोर विभाजन, सामाजिक संरचना को विघटित कर रहा था, लगभग 800 भाषाओं के कारण समाज में विभिन्न समूहों के बीच दूरी बढ़ती जा रही थी। यातायात व संचार व्यवस्था पूरी तरह नष्ट हो गयी थी। अंग्रेजी शासन पर आधारित राजनीतिक कोई भी उपयोगी परिवर्तन लाने में असमर्थ थे। स्वाभाविक है ऐसी दशा

में भारत के ग्रामीण जीवन को पुनः संगठित किए बिना सामाजिक पुर्निर्माण की कल्पना करना पूर्णतया व्यर्थ था।

भारत की 74% जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। जनसंख्या के इतने बड़े भाग की सामाजिक - आर्थिक समस्याओं का प्रभावपूर्ण समाधान किए बिना हम कल्याणकारी राज्य के लक्ष्य को किसी भी प्रकार पूरा नहीं कर सकते। अतः ग्रामीण समुदाय से व्याप्त अशिक्षा, निर्धनता, बेरोजगारी, कृषि के पिछड़ेपन, गंदगी तथा रूढ़िवादिता जैसी समस्याओं को हल करना आवश्यक है। भारत की ग्रामीण जनता के विकास के लिए यह आवश्यक था कि कृषि दशाओं में सुधार किया जाये। किसानों को कृषि योग्य भूमि प्रदान की जाए, सामाजिक-आर्थिक संरचना को बदला जाए। इस लक्ष्य के प्राप्ति हेतु सर्वप्रथम U.P. के इटावा में 1948 में गोरखपुर में एक प्रायोगिक योजना क्रियान्वित की गई। इसकी सफलता से प्रेरित होकर जनवरी 1952 में भारत व अमेरिका में समझौता हुआ। जिसके अंतर्गत भारत के ग्रामीण विकास हेतु अमेरिका का Ford Foundation कोई भी उपयोगी परिवर्तन लाने में सहायता देगा। ग्रामीण विकास के इस योजना का नाम सामुदायिक विकास कार्यक्रम रखा गया तथा October 1952 में महात्मा गांधी के जन्म दिवस पर 55 विकास खंडों की स्थापना करके इस योजना को कार्य आरंभ कर दिया गया।

समुदाय का अर्थ, परिभाषा व महत्व :-

समुदाय अंग्रेजी भाषा में Community कहलाता है जो Cum व munis दो शब्दों से मिलकर बना है Cum का अर्थ एक साथ तथा munis का अर्थ सेवा करना होता है। इस प्रकार समुदाय का अर्थ व्यक्तियों का आस-पड़ोस है जिनमें वे रहते हैं।

परिभाषा :-

* मैकाइवर तथा पेज के अनुसार :-
"समुदाय सामाजिक जीवन के उस क्षेत्र को कहते हैं जिसे सामाजिक समबन्धता अथवा सामंजस्य की कुछ मात्रा द्वारा पहचाना जा सके।"

* गीन के अनुसार :-
"व्यक्तियों का वह समूह जो जीवन की सामान्य ढंग को अपनाते हैं एक स्थानीय क्षेत्र समुदाय है।"

Working with Community की अवधारणा :-

सामाजिक विकास में रुचि लेने वाली सभी व्यक्तियों को इसके अर्थ को समझे बिना इस योजना के कार्यक्षेत्र तथा सार्थकता के विषय में समुचित ढंग से नहीं समझाया जा सकता।

समाज शास्त्रियों के दृष्टिकोण से सामुदायिक कार्यक्रमों को केवल सामुदायिक विकास की एक योजना मात्र ही

नहीं समझा जा सकता है बल्कि यह स्वयं में एक विचारधारा व संरचना है। अर्थात् यह विचारधारा के रूप में ऐसा कार्यक्रम है जो व्यक्तियों को समाज के प्रति उनके उत्तरदायित्व का बोध कराता है तथा एक संरचना के रूप में विभिन्न क्षेत्रों व उनके आपसी पारस्परिक प्रभावों को स्पष्ट करता है।

भारतीय संदर्भ में सामुदायिक कार्यक्रम से तात्पर्य एक ऐसी पद्धति से है जिसके द्वारा समाज की संरचना, आर्थिक संसाधनों, नेतृत्व के स्वरूप तथा जन सहभाग के बीच सामंजस्य स्थापित करते हुए समाज के चतुर्दिक विकास का प्रयत्न किया जाता है।

सामुदायिक कार्यक्रम का अर्थ :-

"सामुदायिक कार्यक्रम एक ऐसा कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य संपूर्ण समुदाय के लिए उच्चतर जीवन स्तर की व्यवस्था करना है और इस कार्य में प्रेरणा - शक्ति समुदाय की ओर आनी चाहिए तथा प्रत्येक समय इसमें जनमानस का सहयोग होना चाहिए।"

"योजना आयोग के प्रतिवेदन में सामुदायिक कार्यक्रम के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि जिसके द्वारा न्यूनतम साधनों की खोज करके समाज के सामाजिक जीवन आर्थिक जीवन - स्तर को ऊँचा उठाया जाता है।"

सामुदायिक कार्यक्रम का उद्देश्य :-

सामुदायिक कार्यक्रम

का मुख्य उद्देश्य जन साधारण के जीवन का सर्वांगीण विकास करना है। ग्रामीण समुदाय की प्रगति एवं श्रेष्ठतम जीवन - स्तर के पथ को प्रदर्शन करना है। इस रूप में सामुदायिक कार्य के उद्देश्य इतने व्यापक है कि इनकी कोई निश्चित सूची बनाना अत्यंत कठिन कार्य है। सामुदायिक कार्यक्रम के महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नलिखित है —

→ समाज में एक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन लाना ताकि समाज की नवीनतम आकांक्षाओं, प्रेरणाओं, प्रविधियों एवं विश्वासों को ध्यान में रखते हुए मानव शक्ति के विकास में सुधार लाना।

→ देश का कृषि उत्पादन प्रचुर मात्रा में बढ़ाने का प्रयास करना, संचार सुविधाओं का विस्तार, शिक्षा का प्रचार - प्रसार सामाजिक स्वास्थ्य और सफाई की दशाओं में सुधार करना।

→ समाज में सामाजिक व आर्थिक जीवन के आधार के सुधार हेतु सुव्यवस्थित रूप से सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं का प्रारंभ करना।

→ उत्तरदायी व कुशल नेतृत्व का विकास करना।

→ संपूर्ण जन साधारण को आत्मनिर्भर व प्रगतिशील बनाना।

→ सामाजिक व आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए आधुनिकीकरण को बढ़ावा देना।

→ राष्ट्र के भावी नागरिकों के रूप में युवा शक्ति का समुचित विकास पर ध्यान देना।

→ सामाजिक स्वास्थ्य व सुरक्षा को बढ़ावा देना।

सामुदायिक कार्यक्रमों का महत्व :-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए उसके अपने समुदाय के प्रति कुछ कर्तव्य है। इस कर्तव्य के पूर्ति हेतु समाज के कल्याणमय कार्य करता है।

* सामुदायिक कार्यक्रमों से व्यक्ति में सामुदायिक भावना का विकास होना है।

* सामुदायिक कार्यक्रमों का प्रमुख उद्देश्य मनुष्य व समाज की भलाई होता है जिससे सामाजिक दशाओं में सुधार होता है।

* समाज में एकता व समरसता की भावना का विकास होता है।

"बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना" :-

0-6 साल वर्ग में 1000 लड़कों के बीच परिभाषित बाल लिंग अनुपात में प्रति लड़कों की संख्या में प्रति लड़कियों की संख्या में गिरावट की प्रवृत्ति 1961 से लगातार देखी जा रही है। 1991 ई० में यह संख्या 945/1000, 2001 में 927/1000 और 2011 में यह संख्या 918/1000 पहुंचने पर,

इसे खतरा मानते हुए इसे सुधारने के प्रयास किए गए। लिंग अनुपात में गिरावट का यह स्तर सीधे तौर पर समाज में महिलाओं के स्थान की ओर इशारा करता है। जो जन्म-पूर्व लिंग भेदभाव और उसके चयन की ओर इशारा करता है। चिकित्सीय सुविधाओं की सरल उपलब्धता व नवीन तकनीक जन्म पूर्व बच्चे के चयन को संभव बनाकर लिंग अनुपात घटाने में आलोचनात्मक रूप से सामने आयी है।

"बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना (BBBP) महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य मंत्रालय की संयुक्त पहल है। इसमें जमानित व अभिसारित प्रयास के अंतर्गत बालिकाओं को संरक्षण और सशक्त करने के लिए प्रयास के लिए किए गए। सशक्त इस योजना की शुरुआत "22 जनवरी 2015 को की गई है जिसे निम्न लिंगानुपात वाले 100 जिलों से प्रारंभ किया गया। सभी राज्य संघ शासित क्षेत्रों के कवर 2011 की जनगणना के अनुसार निम्न बाल लिंगानुपात के आधार पर प्रत्येक राज्य में कम से कम एक जिले के साथ 100 जिलों का यह पायलट जिसे के रूप में चयन किया गया था। जिसे बाद में बढ़ाकर 161 जिले कर दिया गया था।

"लोग कहता है चमन बदला है,
पक्षी कहता है गगन बदला है,
मगर सच तो यही है कि,
मुर्दा वही है कफन बदला है।"

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के प्रमुख उद्देश्य

i) पक्षपाती लिंग चुनाव की प्रक्रिया का उन्मूलन व लिंग भेद की समस्या का निराकरण करना।
ii) बालिकाओं का अस्तित्व व सुरक्षा सुनिश्चित करना।
iii) बालिकाओं की शिक्षा सुनिश्चित करना।
iv) समाज में महिलाओं व लड़कियों को स्वतंत्रता व समानता का अधिकार दिलाना।

योजना के संघटक :-

1. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पर जनसंचार अभ्यास :

* देश व्यापी कार्यक्रम के रूप में प्रारंभ होगा जिससे बालिका के जन्म को जश्न के रूप में मनाने के साथ शिक्षा ग्रहण करने में सक्षम बनाया जाएगा। इस अभियान का उद्देश्य लड़कियों का जन्म, पोषण आदि शिक्षा बिना किसी भेदभाव के हो तो समान अधिकारों के साथ देश की सशक्त नागरिक बनें।

राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों के निम्न लिंगानुपात वाले से कम बहुपक्षीय शुरुआत संदर्भित क्षेत्रों राज्यों व जिलों में सुनिश्चित परिणाम प्रेक्षित और संकेतकों को एक साथ प्रयोग में लाया जाता है।

सोशल मीडिया का सहयोग :-

बच्चों के

लिंगानुपात के मुद्दे पर प्रासंगिक विडियों के साथ BBBB पर एक youtube Channel शुरू किया गया है व कई-कुई विडियो आदि के माध्यम से जागरूकता पैदा करने का प्रयास किया गया है तथा जनभागीदारी को प्रोत्साहन व समर्थन हेतु MyV GOV. पोर्टल से लोगों को जोड़ा जा रहा है।

योजना हेतु बजट का आवंटन :- इस योजना के अंतर्गत 100 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया है। 12 वीं पंचवर्षीय योजना में बालिकाओं की देखभाल व सुरक्षा हेतु A Multisectoral कार्य योजना के अंतर्गत रुपये जुटाए जाएंगे तथा अतिरिक्त संसाधन राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर कॉर्पोरेट व सामाजिक दायित्व के माध्यम से जुटाए जाएंगे।

विद्यालय में क्रिया का प्रबंधन :- इस अभियान के प्रति छात्रों में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए हमने एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया जिसमें इस योजना के बारे में छात्रों की जानकारी व बेटियों व महिलाओं को जागरूक किया।

क्रिया का छात्रों पर प्रभाव :-

i) कन्या भ्रूण हत्या से संबंधित आँकड़ों के प्रति सचेत हुए।

ii) लिंग समानता के प्रति जागरूकता का प्रसार।
iii) लिंग भेदभाव के दुष्प्रभावों की जानकारी।
iv) बेटियों को पढ़ाने हेतु जागरूकता की भावना का विकास।

सुझाव :- "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" अभियान कॉलेज, स्कूलों के माध्यम से चलाए जाए। जिसमें भावी पीढ़ी में उचित अभिवृत्ति का विकास हो सके।

Activity - 2

"स्वच्छ भारत अभियान"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल व गाँधी जी के "स्वच्छ भारत सुंदर भारत" को साकार करने के लिए "स्वच्छ भारत अभियान" भारत सरकार द्वारा आरंभ किया गया जो कि राष्ट्रीय स्तर का अभियान है, जिसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा अन्य संरचना को साफ-सुथरा रखना और कूड़ा साफ करना है। इस अभियान की शुरुआत से "2 October 2014" को राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी ने देश को गुलामी से मुक्त कराया था। परंतु स्वच्छ भारत का उनका सपना आज भी आजादी के 70 वर्ष बाद नहीं हो सका। इस मिशन को बापू की 150 वीं पुण्य तिथि (2 October 2019) तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

अभियान का उद्देश्य :-

इस अभियान के प्रमुख उद्देश्य कलस्टर और सामुदायिक शौचालय के निर्माण करके खुले में शौच से मुक्त भारत को हासिल करने का लक्ष्य रखा गया है।

शहरी क्षेत्रों के लिए स्वच्छ भारत अभियान :-

इस अभियान का उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में 1.04 करोड़ परिवारों को लक्षित करते हुए 2.5 लाख सामुदायिक शौचालयों का निर्माण करना। 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालयों और प्रत्येक शहर में एक ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की सुविधा प्रदान करना है। इस कार्यक्रम के तहत अनुवास क्षेत्रों में जहाँ व्यक्तिगत घरेलु शौचालयों का निर्माण पर्यटन स्थलों, बाजारों, बस स्टॉप, रेलवे स्टेशन, जैसे प्रमुख स्थानों पर सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण किया जाएगा। यह कार्यक्रम 5 साल की अवधि में 4401 शहरों में लागु किया जाएगा। कार्यक्रम पर खर्च किये जाने वाले 62009 करोड़ रुपये केंद्र सरकार 14623 करोड़ रुपये उपलब्ध कराएगी। केंद्र सरकार द्वारा प्राप्त 14623 Cr Rs। में से - 7366 Cr Rs। ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर 4165 Cr Rs। व्यक्तिगत घरेलू शौचालय पर 1828 Cr Rs। जून जागरूकता व 655 Cr Rs। - सामुदायिक शौचालय बनवाने पर खर्च किए जाएँगे।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान :-

निर्मल भारत अभियान कार्यक्रम भारत सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में लोगों के लिए मांग आधारित व जन केंद्रित अभियान है जिसमें लोगों की स्वच्छता संबंधी आदतों को बेहतर बनाना एवं सुविधाओं की मांग उत्पन्न करना तथा ग्रामीण जीवन को ऊपर उठाने का प्रयास करना है। इसके तहत ग्रामीण क्षेत्रों में 11 करोड़ 11 लाख शौचालयों के निर्माण के लिए 1 लाख 34 हजार करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे।

अभियान के एक भाग के रूप में प्रत्येक पारिवारिक इकाई के अंतर्गत व्यक्तिगत घरेलु शौचालयों की इकाई लागत को 10000 RS/- से बढ़ाकर 12000 RS/- कर दिया जाएगा। इस तरह के शौचालय में 4000/Rs केंद्र सरकार व 3000/-Rs राज्य सरकार की तरफ से प्राप्त होंगे। जम्मू कश्मीर व उत्तर पूर्वी राज्यों व विशेष दर्जा प्राप्त राज्यों को मिलने वाली सहायता 10800/RS- होगी जिसमें 7200 RS/- राज्य का योगदान होगा।

चयनित सार्वजनिक व्यक्ति :-

मोदी जी ने इस अभियान के प्रचार करने के लिए 11 लोगों को चुना है -

1. सचिन तेंदुलकर
2. प्रियंका चोपड़ा
3. अनिल अम्बानी
4. बाबा रामदेव
5. शशि थरूर
6. सलमान खान

7. तारक मेहता की टीम
8. मृदुला सिंह
9. कमल हसन
10. विराट कोहली
11. महेंद्र सिंह धोनी

विद्यालय में क्रिया प्रबंधन :-

समाज में स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए हमने विद्यालय में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया। छात्रों की स्वच्छता के प्रति जागरूक क्रिया प अपने - अपने अनुभव साझा किया। इसके पश्चात सभी को विद्यालय व अपने आस - पास सफाई रखने की आदत दिलायी।

क्रिया का प्रभाव :-

i) सभी छात्र अपनी - अपनी कक्षा विद्यालय व आस - पास के स्वच्छता के प्रति जागरूक हुए।

ii) छात्रों ने अपने जीवन में स्वच्छता के महत्व को समझा।

iii) छात्रों ने स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता की अनिवार्यता को समझा।

सुझाव :-

यद्यपि राज्य व केंद्र सरकार स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए अनेक प्रकार के कार्यक्रम चला रही है परंतु जन - साधारण को भी अपने स्तर पर इसके लिए प्रयास करने की आवश्यकता है।

Activity - 3

ग्रीन इंडिया योजना (Green India Mission) :-

भारत के समक्ष जलवायु परिवर्तन के वैश्विक खतरे से निपटने के साथ - साथ तेजी से विकसित हो रही अपनी अर्थव्यवस्था को बढ़ाए रखने की भी चुनौती है। दीर्घकाल से मानव जाति ग्रीन हाउस गैसों का वातावरण में संचित होने, तीव्र औद्योगिक प्रगति और विकसित देशों में उच्च खपत, जीवन शैलियों के कारण यह खतरा उत्पन्न हुआ है।

हालांकि भारत द्वारा जलवायु परिवर्तन के प्रति स्वयं को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ मिलकर सामुहिक सहयोगात्मक ढंग से इस खतरे को सामान्य करने का प्रयास किया जा रहा है। फिर भी भारत के द्वारा जलवायु परिवर्तन के प्रति स्वयं को अनुकूलित करने और विकास पथ की पारिस्थितिकी निरंतरता को बनाए रखने हेतु 30 जून 2008 को जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना जारी किया गया। इसके तहते 80 राष्ट्रीय विकासों को राष्ट्रीय मिशन को शामिल किया गया जो इस प्रकार है -

1) राष्ट्रीय सौर मिशन
2) राष्ट्रीय संवर्धित ऊर्जा दक्षता मिशन
3) राष्ट्रीय सतत् पर्यावास मिशन
4) राष्ट्रीय जल मिशन
5) राष्ट्रीय हरियाली प्रविप्रणाली परीक्षण मिशन

6) राष्ट्रीय ग्रीन इंडिया मिशन
7) राष्ट्रीय सतत् कृषि मिशन
8) राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्यनितिक ज्ञान मिशन

ग्रीन इंडिया मिशन :-

"20 फरवरी 2011 को केंद्रीय मंत्रिमंडल की आर्थिक कार्य समिति द्वारा केंद्र प्रयोजित योजना के क्षेत्र में राष्ट्रीय ग्रीन इंडिया मिशन को मंजूरी प्रदान की गई है। इसका लक्ष्य भारत में घटते वन क्षेत्र का संरक्षण पुर्नवीनीकरण और वन क्षेत्र में वृद्धि करना है। साथ ही अनुकूलन का समान उपायों द्वारा जलवायु परिवर्तन का सामना करना है। इसके लिए हरियाली के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की कल्पना की गयी है साथ ही कई पारिस्थितिक तंत्र सेवाओं विशेष रूप से जैव-विविधता, जल, बायोमास, मैंग्रोव संरक्षण झीलों, संकटग्रस्त प्रवासों आदि पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित किया गया है। इस मिशन के अंतर्गत योजना बनाने, निर्णय लेने, क्रियान्वयन व निगरानी में स्थानीय समुदायों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

राष्ट्रीय ग्रीन इंडिया मिशन की कार्यान्वयन अवधि 12वीं व 13वीं पंच-वर्षीय योजना के दौरान 10 वर्ष की होगी। मिशन के लिए वितीय सहायता योजना व्यय और मनरेगा गतिविधियों प्रति-पूरक वानीकिकरण कोष प्रबन्धन एवं योजना को मिलने के जरिए प्रबंधन तथा राष्ट्रीय कार्य योजना को मिलने के जरिए जुटायी जाएगी। पूर्वोत्तर राज्य के लिए

योजना व्यय 90% खर्च केंद्र व राज्य के खर्च का अनुपात +5 : 25 होगा। संपूर्ण मिशन की लागत 46000 Cr Rs/- आंकी गयी।

Green India Mission के उद्देश्य :-

i) 5 मिलियन वन और वन भूमि पर वृक्षारोपण से वृद्धि हेतु और अन्य 5 मिलियन हेक्टेयर में वनाच्छादन की गुणवत्ता में सुधार करना।

ii) उपर्युक्त 18 मिलियन हेक्टेयर वन क्षेत्र के प्रबंधन के परिणामस्वरूप जब विविधता संबंधी क्षेत्र सेवाओं और कार्बन पृथ्थकरण में 50 - 60 मिलियन टन की वृद्धि करना।

iii) वन पर उसके आस - पास रहने वाले 3 मिलियन परिवारों की वन आधारित आजीविका में वृद्धि करना वर्ष 2020 में वार्षिक CO_2 पृथ्थकरण में 50-50 मिलियन टन में वृद्धि करना।

iv) बायोमास आधारित प्रणाली व बेहतर स्टॉक जैसे वैकल्पिक ऊर्जा उपलब्ध कराने हेतु मंजूरी प्रदान की गई।

v) इस पहलु में वनों पर दबाव घटाने कार्बन लाभ और स्वास्थ्य एवं अन्य संबंधित लाभों को घटाने में मदद मिलेगी।

विधालय में क्रिया प्रबंधन :-

इस विजय पर विधाल

में विचार गोष्ठी आयोजित की गई जिसमें विभिन्न चित्रों व आँकड़ों आदि के माध्यम से विश्व में घटती वनों की संख्या के विषय में जागरूक किया गया। इसके पश्चात छात्रों को वनों की संख्या के विषय में जागरूक किया गया। इसके पश्चात सभी ने मिलकर विद्यालय में एक चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

क्रिया का प्रभाव :-

i) छात्रों में अपने पर्यावरण के प्रति जागरूकता का संचार हुआ।
ii) वृक्षारोपण के प्रति उत्साह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

सुझाव :-

i) स्थानीय स्तर पर इस संबंध में वृक्षारोपण अभियान चलाया जाए व लोगों को इसके प्रति जागरूक किया जाए।

ii) विशेष अवसरों पर सभी सार्वजनिक स्थानों पर जहाँ भूमि खाली हो राष्ट्रीय पार्क आदि में वृक्षारोपण किया जाए।

iii) वृक्षों के महत्व के विषय में स्कूलों व कॉलेजों में बताया जाए।

Make in India :-

Meaning :-

मेक इन इंडिया का अर्थ है सामग्री की वस्तुएँ भारत में ही बनायी गयी। जिस देश में रोजगार के अवसर पैदा हो। इस योजना का मतलब है "मेड इन इंडिया" जिसका हिन्दी में अर्थ है जिन वस्तुओं का निर्माण हमारे देश India में किया गया हो। वस्तुएँ जब भारत में ही बनने लगेंगी तो इनका आयात कम होगा और अगर वस्तुओं का निर्माण हमारे देश में होगा तो अन्य देशों में वस्तुओं का निर्माण के निर्यात करने की संभावना बढ़ेगी जिससे देश की विदेशी आय बढ़ेगी और देश प्रगति की ओर अग्रसर होगा। मेक इन इंडिया का एक और मकसद ये भी है कि पूरे विश्व के प्रमुख निवेशकों के लिए इस अभियान के तहत उन्हें में विश्वास दिलाना है कि भारत आओ और यहां उत्पादों के निर्माण के द्वारा अपने व्यापार को बढ़ाओ। एक रिपोर्ट के अनुसार योजना के लागू होते ही अमेरिका व चीन से बहुत प्रतिक्रिया मिली और FDI (Foreign Direct Investment) द्वारा 2015 में 63 बिलियन डॉलर इनवेस्टमेंट के तौर पर भारत को मिले।

प्रधानमंत्री मोदी ने Make In India की शुरुआत 25 Sep 2014 को दिल्ली के विज्ञान भवन में की। जिसका उद्देश्य विदेश व देश भर की बड़ी कंपनियों को भारत देश में Investment करने के लिए प्रोत्साहित करना है। जिससे रोजगार के बेहतरीन अवसर प्रदान हो और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की एक अलग पहचान बन सके।

Objectives of Make in India :-

→ मेक इन इंडिया के उद्देश्य के तहत विदेश कंपनियों का ध्यान अपनी तरफ खींचना है ताकि विदेशी निवेश को बढ़ावा मिल सके।

→ इसके तहत सरकार ने कुछ क्षेत्रों में विदेशी निवेश सीमा में भी बढ़ोतरी की है जैसे कि रक्षा और ऑटोमोबाइल क्षेत्र में FDI सीमा को बढ़ाना ताकि विदेशी कंपनियाँ भारत में आ कर और निवेश करें, उत्पाद भारत में ही बने।

→ Make in objectives में ज्यादा से ज्यादा समान भारत में बने जिससे समान की कीमत कम हो और बाहर निर्यात होने पर देश की अर्थव्यवस्था को फायदा हो।

→ इस योजना के objectives के तहत भारत में ease of doing business को भी बढ़ावा देना है। जिसका मकसद पुरानी फाइलो वाले approval को बदलकर नए IT संचालित application को बढ़ावा देना है।

Make in India benifits :-

→ मुख्य उद्योग, जिनके तहत शामिल किया है वो है ऑटोमोबाइल, संस्थान, आईटी तथा बीपीएम, विमानन उद्योग, औषधीय निर्माण, बिजली से संबंधित मशीन, खाद्य प्रसंस्करण, रक्षा विनिर्माण

अंतरिक्ष, टेक्सटाईल्स, कपड़ा उद्योग, बंदरगाह चमड़ा, मीडिया और मनोरंजन, स्वास्थ्य, खनन, पर्यटन और मेहमानदारी, रेलवे ऑटोमोबाईल घटक, नवीनीकरण ऊर्जा, बायोटेक्नोलॉजी, सड़क और हाइवे, इलेक्ट्रानिक निकाय और थर्मल ऊर्जा आदि इस योजना में Product के रूप में शामिल है।

→ मेक इन इंडिया objective के तहत आधुनिक और सुविधाजनक बुनियादी ढाँचे की उपलब्धता उद्योग की वृद्धि के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इस योजना के अंतर्गत देश के अंदर स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट, रेल लॉजिस्टिक्स कनेक्टिविटी व. बिजली नेटवर्क फैलाने जैसे अन्य योजनाएं भी चलायी जा रही है ताकि निवेशकों को आकर्षित किया जा सके।

→ सरकार ने माना है कि 14 प्राथमिकता वाले क्षेत्र हैं जिन्हें 15 प्रतिशत में विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन की आवश्यकता होगी जिसमें खनन और खनन, पर्यटन, पूंजीगत सामान और नवीकरणीय ऊर्जा शामिल है।

→ राज्य सरकार के स्तर पर लाइसेंसिंग नियमों को सुव्यवस्थित और तर्कसंगत बनाना श्रम कानून में संशोधन से लेकर ऑनलाइन रिटर्न दाखिल करने तक जैसे कई बदलाव इस योजना के तहत किए गए है।